दरीं मज़ार बसद नाज़ क़दवतुल उलमा
1348 हि0

जनाब यूनुस साहब 'यूनुस' ज़ैदपुरी
पैरवे आले मोहम्मद खिज़्रे राहे मारेफत
हाकिमे शरए नबी महकूमें रब्ब इंसो जां
खामए 'यूनुस' रक़मज़द अज़ पै तारीखे़ फ़ौत
''रहबरे दीं मौलवी आक़ा हसन जन्नत मकाँ''
1348 हि0

जनाब 'मोहज़्ज़ब' लखनवी साहब मरहूम

अज़ मुरदने आक़ा हसन पैदा शुदा रंजो मेहन
महवे फ़ुगां गश्ती दिले हर मरदो ज़न बासद अलम।
वक़्ते रक़्म आवाज़े ग़ैब आमद 'मोहज़्ज़ब' अज़ फलक
मौलाए बैतुलमाल करदा ज़ीनते क़स्रे इरम।
1929 हि0

मौलवी सय्यद फरहत अली नक़वी साहब 'फरहत' जायसी मरहूम

ज़इस्रारे अहबाब साले वफ़ात
रक़्म कर्द 'फ़रहत' चुनीं दफ़अतन।
बगुफ्त हातिफ़े ग़ैब अज़रूए जाँ
रक़्मकुन 'क़ज़ा कर्द आक़ा हसन'।
1348 हि0

नविश्ता कलिक 'फरहत' फिल्बदीह फिकरए मौजूं
''गुरूबे माहे औजो हिल्म'' साले इन्तेक़ाल आमद।
1 3 4 8 हि0

जनाबे मिर्ज़ा मोहम्मद हादी 'अज़ीज़' लखनवी मरहूम

अज़ीज़ मिस्र–ए–फ़ौतश शुनीद अज़ रिज़वां
''बखुल्दे मंबए अनवार क़ुदवतुल उलमा''।
1 3 4 8 हि0

हज़रत मानी जायसी मरहूम

बूदम बईं ग़म मुब्तेला कज़ बहरे तारीख आमदा
अज़ पेश रिज़्वानम निदा ''मंज़िल गहश खुल्देबरीं''।
1 3 4 8 हि0

मौलाना मोहम्मद हुसैन साहब नौगांवी मरहूम

वा दरेग़ा व दरेग़ा व दरेग़
दो जहां में हो गया महशर बपा।
हज़रते महदी के नायब उठ गए
अफ़ज़ले आलम फ़क़ीहे बे रिया।
जुहद में ईसारो इल्मो फ़ज़्ल में
रखते थे अम्साल में पाया बड़ा।
फ़िक्र जब तारीख़ की मुझ को हुई
सर गरीबां में ज़रा डाला ही था।
यह हुआ तारीख़ का मिसरअ बहम
''मौलवी आक़ा हसन ने की क़ज़ा''।

1348हि0

अन्जुमने हुसैनी जायस की ओर से

हज़रते आक़ा हसन साहब फ़क़ीहे मोतमन
जिनके उठ जाने से वीरां है फ़क़ाहत का चमन।
था अजब औसाफ़े ज़ाती का वह मालिक राहबर
घर में एक खामोश आबिद बज़्म में शम–ए–सुख़न।
इस क़दर जो वज़ा का पाबन्द था क्या हो गया
बज़्म में आता नहीं बेचैन हैं अहले वतन।
पेशवाए अहले आलम अब कहीं मिलता नहीं
मुब्तेलाए ग़म है जायस की हुसैनी अन्जुमन।

मदहे इमामे स़ादिक़ अ0 स0

नदल हिन्दी

फ़िर हो रही है सादिक़े आले नबी की बात
आलम में आम हो गयी है रौशनी की बात

आले नबी की बात में है ज़िन्दगी की बात
और उन को भूल जाओ तो है मौत ही की बात

ये है ख़ुदी की बात कि मदहे इमाम कर
ग़ैरों का तज़केरा है फ़क़त बेख़ुदी की बात

मैं हूँ असीरे उलफ़ते औलादे मुस्तफ़ा
आज़ादी जिस को कहते हो वह है कभी की बात

मौलाए काएनात अ0 है वो इतना है सबब
छाई है कुल ज़माने पे मौला अली अ0 की बात

बाक़िर के घर से लिपटीं हैं रौशन ज़मीरियाँ
जिसको भी देखो करता है तक़दीर ही की बात

जाफ़र ने लो उलूम के दरिया बहा दिये
सच में इसी को कहते हैं दरिया दिली की बात

बिमारे इश्क़े आले नबी बन के मर ''नदा''
इसमे छिपी हुई है तेरी ज़िन्दगी की बात